६. मुगलों से संघर्ष

अब तक शिवाजी महाराज ने आदिलशाही के साथ सफलतापूर्वक संघर्ष किया था परंतु स्वराज्य का विस्तार करते समय मुगलों से संघर्ष करना भी अटल था। स्वराज्य का विस्तार प्रारंभ होते ही स्वराज्य पर मुगलों का संकट मंड़राने लगा । शिवाजी महाराज ने इस संकट पर भी विजय पाई । मुगलों से अपने किले और प्रदेश पुन: अपने अधिकार में कर लिए । स्वयं का राज्याभिषेक करवाया । दक्षिण में अभियान चलाया। इस पाठ में हम इन सभी घटनाओं की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

शाइस्ता खान का आक्रमण : फरवरी १६६० में शाइस्ता खान अहमदनगर से पुणे प्रांत में आया। उसने सैनिकों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ आसपास के प्रदेशों में भेजकर स्वराज्य के प्रदेश को बुरी तरह से ध्वस्त किया । उसने चाकण के किले को घेर लिया। चाकण किले का किलेदार फिरंगोजी नरसाला ने शाइस्ता खान की सेना का डटकर सामना किया। अंतत: शाइस्ता खान ने चाकण के किले को जीत लिया ।

अब शाइस्ता खान ने पुणे के लाल महल में पड़ाव डाला। यहाँ तो शिवाजी महाराज का बचपन बीता था। यहाँ से उसने आसपास के प्रदेश की लूट-पाट जारी ही रखी । दो वर्ष हुए फिर भी वह पुणे से अपना पड़ाव हटाने को तैयार नहीं था । इसका दुष्प्रभाव प्रजा के मनोबल पर होना स्वाभाविक था। इस स्थिति में शिवाजी महाराज ने एक साहसिक योजना बनाई ।

शिवाजी महाराज ने अपनी निगरानी में लाल महल पर चुपचाप धावा बोलने की साहसिक योजना बनाई । इस योजना के अनुसार ५ अप्रैल १६६३ को शिवाजी महाराज ने रात के समय अपने कुछ सैनिकों के साथ लाल महल पर धावा बोल दिया। इस धावे में शाइस्ता खान की उंगलियाँ कट गईं । इससे वह अपमानित हुआ । वह पुणे छोड़कर औरंगाबाद चला गया और वहाँ अपना पड़ाव डाला। इस घटना के कारण शाइस्ता खान को औरंगजेब का रोष सहना पड़ा । औरंगजेब ने उसे बंगाल के सूबे में भेजा । शाइस्ता खान पर हुए इस सफल आक्रमण से लोग भी प्रभावित हुए । शिवाजी महाराज के प्रति लोगों का विश्वास दृढ़ हो गया ।

बताओ तो

सूरत शहर जाना है तो तुम कैसे जाओगे; यह मानचित्र की सहायता से दर्शाओ ।

- शिवाजी महाराज सूरत कैसे पहुँचे होंगे; इसकी कल्पना करो ।

सूरत पर आक्रमण : तीन वर्ष की कालावधि में शाइस्ता खान ने स्वराज्य का बड़ा प्रदेश ध्वस्त किया था । इस हानि को पूर्ण करना आवश्यक था। अत: शिवाजी महाराज ने मुगलों को सबक सिखाने की योजना बनाई । मुगलों के अधिकार में सूरत शहर था। यह बहुत बड़ा व्यापारिक केंद्र और बंदरगाह था । वहाँ अंग्रेज, डच और फ्रांसीसियों के गोदाम थे । इस शहर से बादशाह औरंगजेब को सबसे अधिक राजस्व प्राप्त होता था। साथ ही; सूरत आर्थिक रूप से संपन्न शहर था । अत: शिवाजी महाराज ने सूरत पर आक्रमण किया। सूरत का सूबेदार इनायत खान शिवाजी महाराज का प्रतिकार नहीं कर पाया। सामान्य प्रजा को कष्ट न पहुँचाते हुए उन्होंने सूरत से विपुल संपत्ति पाई । उनका यह अभियान सफल रहा । इस अभियान से औरंगजेब की प्रतिष्ठा को आघात लगा ।

जयसिंह का आक्रमण : शिवाजी महाराज की बढ़ती गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए औरंगजेब ने अपने पराक्रमी और अनुभवी सरदार मिर्जा राजे जयसिंह को भेजा । जयसिंह पुणे पहुँचा। उसने शिवाजी महाराज के विरोध में सभी शक्तियों को संगठित करने के अपने प्रयास प्रारंभ किए । जयसिंह ने गोआ और

वसई के पुर्तगालियों, वेंगुर्ला के डचों, सूरत के अंग्रेजों, जंजीरा के सिद्‌दियों को सुझाया कि वे शिवाजी महाराज के विरुद्‌ध नौसेना अभियान चलाएँ ।

जयसिंह ने शिवाजी महाराज के अधिकारवाले किलों को जीतने की योजना बनाई । स्वराज्य के विविध भागों में उसने मुगल सैनिकों की टुकड़ियों को भेजा । उन सैनिकों ने स्वराज्य के प्रदेश को तहस-नहस किया । शिवाजी महाराज ने मुगलों का प्रतिकार किया । जयसिंह और दिलेर खान ने पुरंदर किले को घेर लिया । पुरंदर को घेरे जाने पर मुरारबाजी देशपांडे ने वीरता की पराकाष्ठा की परंतु वह वीरगति को प्राप्त हुआ । परिस्थिति की गंभीरता को देखते हुए शिवाजी महाराज ने जयसिंह से बातचीत करने का निर्णय किया । वे जयसिंह से मिले । जयसिंह और शिवाजी महाराज के बीच जून १६६५ में संधि हुई । इसे 'पुरंदर की संधि' कहते हैं । इस संधि के अनुसार शिवाजी महाराज ने तेईस किले और उनके आस-पास का वार्षिक चार लाख होन आयवाला प्रदेश दिया । शिवाजी महाराज ने आदिलशाही के विरुद्‌ध मुगलों की सहायता करने का आश्वासन भी दिया । इस संधि को औरंगजेब ने स्वीकृति दी ।

बताओ तो

शिवाजी महाराज आगरा में औरंगजेब की नजरकैद से किस प्रकार निकल आए, इसकी जानकारी प्राप्त करो ।

आगरा जाना और चकमा देकर निकल आना : पुरंदर की संधि के बाद जयसिंह ने आदिलशाही के विरुद्‌ध अभियान चलाया । शिवाजी महाराज ने जयसिंह की सहायता की परंतु जयसिंह का यह अभियान सफल नहीं हुआ । उस समय जयसिंह और औरंगजेब बादशाह ने यह विचार किया कि कुछ समय के लिए शिवाजी महाराज को दक्षिण की राजनीति से दूर रखना चाहिए । इस निर्णय के अनुसार जयसिंह ने शिवाजी महाराज के सामने प्रस्ताव रखा कि वे औरंगजेब से मिलने आगरा जाएँ । जयसिंह ने उन्हें उनकी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त कराया । शिवाजी महाराज ने आगरा के लिए प्रस्थान किया । उनके साथ राजपुत्र संभाजी तथा विश्वसनीय और प्राण निछावर करने वाले चुनिंदा सहयोगी भी थे ।

शिवाजी महाराज आगरा पहुँचे परंतु औरंगजेब ने दरबार में उन्हें उचित सम्मान प्रदान नहीं किया । इसपर शिवाजी महाराज ने अपना क्रोध व्यक्त किया । इसके पश्चात औरंगजेब ने उन्हें नजरबंद किया । बादशाह की इस हरकत से शिवाजी महाराज विचलित नहीं हुए अपितु उन्होंने नजरबंदी से छुटकारा पाने की योजना बनाई । वे बड़ी चतुराई से आगरा से निकल गए और कुछ दिनों के बाद महाराष्ट्र में सकुशल पहुँच गए । आगरा से आते समय उन्होंने संभाजी महाराज को मथुरा में छोड़ा था । कालांतर में उन्हें भी सकुशल राजगढ़ पर लाया गया । जब शिवाजी महाराज स्वराज्य से दूर थे तब वीरमाता जिजाबाई और शिवाजी महाराज के सहयोगियों ने प्रशासन चलाया ।

मुगलों के विरुद्‌ध आक्रामक भूमिका : शिवाजी महाराज मुगलों के साथ तुरंत संघर्ष नहीं चाहते थे परंतु पुरंदर की संधि के अनुसार मुगलों को दिए हुए किले और प्रदेश पुन: प्राप्त करना उनका उद्‌देश्य था । इसके लिए उन्होंने एक व्यापक और साहसिक योजना बनाई । इस नीति के अनुसार एक ओर दिए हुए विभिन्न किलों पर पूरा दल-बल भेजकर किले अपने अधिकार में कर लेने हैं और दूसरी ओर मुगलों के प्रभाववाले दक्खिनी प्रदेशों पर आक्रमण करके उन्हें परेशान कर रखना है । अब उन्होंने मुगलों के अहमदनगर और जुन्नर प्रदेशों पर आक्रमण किए । इसके बाद सिंहगढ़, पुरंदर, लोहगढ़, माहुली, कर्नाला और रोहिड़ा किले जीत लिए । इसके पश्चात शिवाजी महाराज ने दूसरी बार सूरत पर धावा बोला । सूरत से लौटते समय उनका नाशिक जिले में वणी-दिंडोरी स्थान पर मुगलों के साथ जबर्दस्त संघर्ष हुआ । इस संघर्ष में शिवाजी

महाराज ने मुगल सरदार दाऊद खान को पराजित किया । तदुपरांत मोरोपंत पिंगळे ने नाशिक के निकट त्र्यंबकगढ़ को जीता।

इस प्रकार मुगलों के विरुद्‌ध शिवाजी महाराज ने जो आक्रामक नीति अपनाई थी, वह सफल हुई । आक्रमण के इन अभियानों में तानाजी मालुसरे, मोरोपंत पिंगळे, प्रतापराव गुजर आदि सरदारों ने उल्लेखनीय पराक्रम दिखाया। बखरकार (इतिहासकार) कृष्णाजी अनंत सभासद ने इन अभियानों का वर्णन करते हुए लिखा है, 'चार महीनों में सत्ताईस गढ़ अपने अधिकार में कर लिए; बड़ी ख्याति पाई ।'

राज्याभिषेक : लगातार तीस वर्षों के अथक परिश्रम के फलस्वरूप मराठों का स्वराज्य साकार हो गया था परंतु स्वराज्य के स्वतंत्र और प्रभुत्व संपन्न अस्तित्व को सिद्‌ध करने के लिए इस स्वराज्य को अधिकृतता और सभी की मान्यता प्राप्त होना आवश्यक है; यह शिवाजी महाराज के ध्यान में आया । इसके लिए विधिवत राज्याभिषेक करवाना आवश्यक था । ६ जून, १६७४ को शिवाजी महाराज ने विद्‌वान पंडित गागा भट्‌ट द्‌वारा रायगढ़ पर अपना राज्याभिषेक करवाया ।

इस राज्याभिषेक द्‌वारा अब शिवाजी महाराज स्वराज्य के छत्रपति बने । संप्रभुता के प्रतीक रूप में उन्होंने 'राज्याभिषेक शक' इस नई कालगणना को प्रारंभ किया । अब वे 'शककर्ता' बने ।

छत्रपति शिवाजी महाराज

राज्याभिषेक के अवसर पर उन्होंने स्वर्ण का सिक्का 'होन' और तांबे का सिक्का 'शिवराई' ढाले । इन सिक्कों पर 'श्री राजा शिवछत्रपति' ये अक्षर उकेरे हुए थे । इसके पश्चात कालांतर में राजपत्रों पर 'क्षत्रिय कुलावंतस श्री राजा शिवछत्रपति' का उल्लेख किया जाने लगा । राज्याभिषेक के पश्चात उन्होंने फारसी शब्दों का पर्यायी संस्कृत शब्दोंवाला एक कोश तैयार करवाया । इसी को 'राज्यव्यवहारकोश' कहते हैं ।

रायगढ़

याद करो ...

किस भारतीय शासक ने नई कालगणना का प्रारंभ किया ?

ध्यान में रखो

राज्यव्यवहार कोश में आए हुए कुछ प्रतिशब्द उल्लेखनीय हैं ।

जैसे–किताब–पदवी (खिताब),
फरमान–राजपत्र, जामीन–प्रतिभूति,
हाली–संप्रति, माजी–पूर्व/भूतपूर्व
फिलहाल–तत्काल (इस समय),
वाहवा–उत्तम, वकूब–प्रज्ञा,
बेवकूफ–मूढ़ (मूर्ख), दस्तपोशी–हस्तस्पर्श,
मुलाखत–दर्शन,
कदमपोशी–चरणस्पर्श, झूठ–मिथ्या (असत्य),
कौलनामा–अभय, फतेह–विजय,
फिर्याद (फरियाद)– अन्यायवार्ता (न्याय हेतु याचना करना), शिलेदार–स्वतुरगी (जिसके पास स्वयं का घोड़ा है ।)

मध्यकालीन भारत के इतिहास में शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक एक क्रांतिकारी घटना है। इस घटना के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए इतिहासकार सभासद कहता है–''मराठा पातशाह इतना बड़ा छत्रपति बना; यह कोई साधारण बात नहीं है ।''

इसके बाद शिवाजी महाराज ने अल्पावधि में २४ सितंबर १६७४ को निश्चलपुरी गोसावी के मार्गदर्शन में तांत्रिक पद्धति द्वारा राज्याभिषेक करवाया । भारत में धार्मिक विधियों की दो परंपराएँ– वैदिक और तांत्रिक प्रचलित थीं । इन दोनों पद्धतियों का आदर करते हुए शिवाजी महाराज ने इन पद्धतियों द्वारा अपना राज्याभिषेक करवाया ।

क्या तुम जानते हो ?

शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के समय युवराज संभाजीराजे की आयु १७ वर्ष की थी । उन्होंने 'बुधभूषण' ग्रंथ में राज्याभिषेक समारोह का वर्णन किया है। यह वर्णन उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर किया है।

'छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक समारोह के अवसर पर अलग–अलग प्रांतों से जो विद्वान आए थे; उन्हें बिना तौले और गणना किए विपुल धन दिया गया । साथ ही; उन्हें वस्त्र, हाथी, घोड़े भी दान में देकर संतुष्ट किया गया ।'

इस प्रकार छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपनी कीर्ति दसों दिशाओं में फैलाई ।

क्या तुम जानते हो ?

शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक हेतु अत्यंत मूल्यवान और भव्य सिंहासन का निर्माण करवाया गया। सिंहासन की आठ दिशाओं में आठ रत्नजड़ित स्तंभ थे । यह सिंहासन आठ मन स्वर्ण का था तथा इसमें मूल्यवान रत्न जड़े गए थे ।

- 'मन' इकाई (एकक) को गणित के शिक्षकों से समझो ।

दक्षिण का अभियान : राज्याभिषेक के लगभग तीन वर्षों के बाद अक्तूबर १६७७ में शिवाजी महाराज ने दक्षिण में अभियान चलाया । वे गोलकुंडा गए और कुतुबशाह से मिले । उन्होंने उसके साथ

मित्रता की संधि की । आगे चलकर शिवाजी महाराज ने कर्नाटक के बंगलुरु, होसकोट तथा वर्तमान तमिलनाडु के जिंजी, वेल्लोर आदि किले और आदिलशाह के कुछ प्रदेश जीत लिए लेकिन उनकी सेना ने वहाँ की प्रजा को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं पहुँचाया । विजित प्रदेश के प्रशासन की देखरेख के लिए प्रमुख प्रशासक के रूप में रघुनाथ नारायण हणमंते की नियुक्ति की ।

शिवाजी महाराज के सौतेले भाई व्यंकोजी वर्तमान तमिलनाडु के तंजौर में शासन कर रहे थे । शिवाजी महाराज का प्रयास था कि उन्हें भी स्वराज्य के कार्य में सहभागी करा लें । व्यंकोजी राजे के पश्चात तंजौर के राजाओं ने विभिन्न विद्याओं और कलाओं का संवर्धन किया । यहाँ का 'सरस्वती महल' ग्रंथालय विश्वविख्यात है ।

दक्षिण के अभियान में शिवाजी महाराज ने तमिलनाडु का जिंजी किला जीतकर उसे स्वराज्य में समाविष्ट कर लिया । उनके इस कार्य को भविष्य में बड़ा ही निर्णायक महत्त्व प्राप्त हुआ । मुगल शासक औरंगजेब स्वराज्य को नष्ट करने के लिए महाराष्ट्र में पाँव जमाए बैठा था । उस समय तत्कालीन छत्रपति राजाराम महाराज को अपनी सुरक्षा की दृष्टि से महाराष्ट्र से बाहर जाना पड़ा था। वे दक्षिण के इसी जिंजी किले के आश्रय में चले गए थे और वहीं से स्वराज्य का प्रशासन चलाया ।

इस दक्षिण विजयी अभियान के पश्चात अल्पावधि में ३ अप्रैल १६८० को शिवाजी महाराज का रायगढ़ में निधन हो गया । पचास वर्ष की आयु में उनका निधन होना स्वराज्य के लिए अपूरणीय क्षति थी । एक महान युग का अस्त हो गया ।

शिवाजी महाराज की समाधि – रायगढ़

स्वाध्याय

१. निम्न घटनाओं को कालक्रमानुसार लिखो :

(१) शिवाजी महाराज का दक्षिण अभियान ।
(२) लाल महल पर धावा ।
(३) आगरा से निकल आना ।
(४) राज्याभिषेक
(५) पुरंदर की संधि
(६) शाइस्ता खान का आक्रमण

73L7T8

२. ढूँढ़ो तो मिलेगा :

(१) संस्कृत शब्दकोश –
(२) जिसने त्र्यंबकगढ़ को जीता –
(३) वणी-दिंडोरी में पराजित सरदार –
(४) वे स्थान; जहाँ अंग्रेज, डच और फ्रांसीसियों के गोदाम थे –

३. अपने शब्दों में लिखो :

(१) शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक ।
(२) आगरा से निकल आना ।
(३) शिवाजी महाराज का दक्षिण अभियान ।
(४) शिवाजी महाराज द्वारा राज्याभिषेक के लिए की गईं तैयारियाँ ।

४. कारण लिखो :

(१) शिवाजी महाराज ने पुरंदर की संधि की ।
(२) शिवाजी महाराज ने मुगलों के विरुद्ध आक्रामक भूमिका अपनाई ।

उपक्रम

(१) विद्यालय में मनाए जानेवाले स्वतंत्रता/गणतंत्र दिवस समारोह के लिए तुम क्या-क्या तैयारियाँ करते हो? शिक्षकों की सहायता से उसकी सूची बनाओ।
(२) अपने परिसर के किसी ऐतिहासिक स्थान पर जाओ और उसका प्रतिवेदन तैयार करो ।